Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, MAR-APR, 2019, VOL- 6/50

वाल्मीकि रामायण में वर्णित आदर्शवाद की वर्तमान प्रांगिकता (एक समीक्षा)

Birpal Singh, Ph. D.
Head – Department of Sanskrit, Government College Gonda Aligarh, U.P.-202123

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण को भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान प्राप्त है। वाल्मीकि रामायण को आदिकाव्य/ आदि ग्रन्थ एवं महर्षि वाल्मीकि को आदि कवि कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण में रचयिता की विलक्षण काव्य प्रतिभा के समावेश के साथ समाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक दर्शन एवं आदर्शात्मकता का समन्वय है। संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि रामायण को ‘‘सिद्धरस शास्त्र’’ कहा गया है।

सन्ति सिद्धरसप्रख्या ये च रामायणादयः।
कथाश्रया न तैर्योज्या स्वच्छा रसविरोधिनी ।।

अर्थात् जिसमें रस की भावना न करनी पड़े तथा रस, आस्वाद के रूप में ही परिणित हो जाता है, वह काव्य ‘‘सिद्धरस काव्य’’कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण को ‘‘चतुर्विंशतिसाहस्त्री संहिता’’ भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें गायत्री के अक्षरों के समान ही चौबीस हजार श्लोक हैं।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध विषय की प्रकृति ऐतिहासिक है अतः शेधार्थिनी द्वारा अध्ययन हेतु **‘‘ऐतिहासिक शोध प्रविधि’’** का चयन किया है। विभिन्न माध्यमों से विषय का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण करके प्राथमिक व द्वितीयक तथ्य एकत्रित किया है। विभिन्न संग्रहालयों में जाकर वाल्मीकि रामायण पर किये गये शोध कार्यो अवलोकन एवं सर्वेक्षण तथा सूक्ष्म निरीक्षण किया गया है ।

तत्पश्चात उनका विश्लेषण एवं विवेचन किया गया है।

वाल्मीकि रामायण का परिचयः

वाल्मीकि रामायण सात काण्डों में विभक्त है। प्रत्येक काण्ड को अनुष्ठान के साथ पाठ किये जाने की सामाजिक परम्परा प्रचलित है। धार्मिक

महत्व के कारण रामायण जनमानस में विशेष स्थान प्राप्त है। वाल्मीकि रामायण सात काण्डों के नाम क्रमशः निम्नवत् वर्णित हैं–

1. **बाल काण्डम्** – इस काण्ड का प्रथम सर्ग **'मूल रामायण'** के नाम से जाना जाता है। इसीकाण्ड में रामायण की मूल विषयवस्तु का वर्णन, श्री राम जन्म, उनकी शिक्षा एवं श्री राम–जानकी विवाह का वर्णन मिलता है।
2. **अयोध्या काण्डम् –** यह काण्ड श्री राम के युवराज से राजा घोषित किये जाने से वन गमन की घटनाओं से सम्बन्धित हैं।
3. **अरण्य काण्डम् –** अरण्य काण्ड में शूर्पणखा प्रसंग, खर–दूषण वध, सीता हरण, राम के ऋष्यमुक पर्वत पर पहुँचने एंव वहाँ से पम्पा सरोवर तक के वृतान्त का वर्णन है।
4. **किष्किन्धा काण्डम् –** इस काण्ड में राम–सुग्रीव मित्रता, बाली वध एवं सीता की खोज हेतु वानर सेनाओं के प्रयासों से सम्बन्धित है। इस काण्ड का पाठ मित्रलाभ एवं नष्ट द्रव्य खोज हेतु किया जाता है।

   मित्रलाभे, नष्द्रव्यस्य च गवेषणे।

   पठित्वा कैष्किन्ध्यम्काण्डम् तत्तत्फलम् लभेत।।[1]
5. **सुन्दर काण्डम् –** सुन्दर काण्ड में हनुमानद द्वारा समुद्र लंड्घन, अशोक वाटिका, लंकादहन, रावणपुत्र अक्षकुमार का वध, हनुमान–मेघनाद युद्ध एवं सीता खोज की सूचना श्री राम तक पहुँचने की घटनाओं का वर्णन है। रामाण का यह काण्ड धार्मिक रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस काण्ड में 68 सर्ग हैं। बृहद्धर्मपुराण के अनुरूप इस काण्ड के, श्राद्ध एवं देवकार्यो में पाठ का विधान है।

   श्राद्धेषु देवकार्येषु पठेत् सुन्दर काण्डम्।।[2]
6. **युद्ध काण्डम् –** रामयण के इस खण्ड में श्री राम–रावण युद्ध, वानर सेना के पराक्रम, राक्षसों का संहार, विभीषण का कुलघात, रावण वध एवं राम विजय, अयोध्या वापसी एवं रामराज्य का वर्णन है। इस काण्ड में 128 सर्ग तथा सर्वाधिक श्लोक (पाँच हजार छः सौ बानवै) हैं। बृहद्धर्मपुराण में इसे लंका काण्ड कहा गया है।

   शत्रोर्जये समुत्साहे जनवादे विगर्हिते।

   लड्काकाण्डे पठेत् वा श्रृणुयात् स सुखी भवेत।।[3]

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

7. **उत्तर काण्डम् –** इस काण्ड में 111 सर्ग तथा तीन हजार चार सौ बत्तीस श्लोक हैं। यह काण्ड जनसामान्य में लव–कुश काण्ड के नाम से भी जाना जाता है। बहुत से विद्वान इसे प्रक्षिप्तांश मानते हैं।

सम्पूर्ण वेदों के अर्थ का समाहित किये हुए रहस्यमय एवं आदर्श के रूप में प्रतिस्थापित श्री राम के चरित्र को नायक के रूप में प्रस्तुत किये जाने के कारण ही इस महीकाब्य को रामायण कहा गया है। ऐसी किंवदन्ती है कि श्रष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने महर्षि वाल्मीकि को आदेश दिया था कि –

रामस्यचरितम् कृतसनं कुरुत्वमृषिसत्तम्। [4]

रामायण के अतिरिक्त इस महाकाव्य को आर्षकाव्य, दिव्यकाव्य, आदिकाव्य, उत्तरकाव्य, आख्यान एवं पुरातन इतिहास भी कहा जाता है। रामायण की विशेषताओं के कारण ही ये विभिन्न नाम प्राप्त हुए हैं। अलंकृत रचना होने के कारण यह काव्य कही जाती है। नायक श्री राम का पूर्ण चरित्र–चित्रण होने के कारण यह आर्ष काव्य कहलाती है। दृष्ट घटनाओं का वर्णन होने के कारण इसे आख्यान कहा गया है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित यह काव्य मानव मूल्यों व आदर्श का एक विशिष्ट संग्रह है। जीवनबोध की विशिष्ट अभिव्यक्ति रामायण के अतिरिक्त विश्व के किसी अन्य ग्रन्थ में देखने को नहीं मिलती है।

वाल्मीकि रामायण के आदर्शों को कुल सात भागों में बाँटा जा सकता है।

प्रथम – पूर्ण शारीरिक विकास

द्वितीय – मानसिक विकास

तृतीय – वैयक्तिक आदर्श

चतुर्थ – संवादगत कुशलता

पंचम – विज्ञान का विषद एवं सूक्ष्म ज्ञान

षष्ठम – नैतिकता एवं

सप्तम – आदर्श सामूहिक चेतना

वाल्मीकि रामायण में आदर्शवादी जीवन दर्शनः

वाल्मीकि रामायण में वर्णित आदर्शवादी जीवन दर्शन को निम्न उपखण्डों में विभाजित किया जा सकता है –

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(क) पित्र आदेशः रामायण कालीन समाज में पित्राज्ञा को ईश आज्ञा के समान ही महत्व दिया गया है। पिता की आज्ञा के अनुपालन में श्री राम ने राज्य को तृणवत् त्याग कर वनगमन किया था, तथा चित्रकूट में भरत को भी पित्राज्ञा को धर्मपालन कहते हुए पितृ सम्मान की सलाह देते हुए लौटा दिया था।

न मया शासनम् तस्य त्यक्तुम् न्यायमरिंदम।
स त्वयापि सदा मान्यः स वै बन्धुः स नः पिता।।[8]

(ख) धर्मः तत्कालीन समय में धर्म सर्वोपरि था। संसार में धर्म ही सार है ऐसी लोक मानसिकता थी।

धर्माद् अर्थः प्रभवति धर्मात् प्रभवते सुखम।
धर्मोण लभते सर्वम् धर्मसारम् इदम् जगत्।।[9]

(ग) सत्यः वाल्मीकि रामायण में सत्य को धर्म का आधार कहा गया है। ऐसी मान्यता थी कि यह समस्त सृष्टि धर्म के कारण ही टिकी हुई है। राजा दशरथ एवं राम के राज्य में अयोध्या का कोई भी नागरिक असत्यवादी नहीं था।

सत्यमेकपदं ब्रह्म सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः।
सत्यमेवाक्षया वेदाः सत्येनावाप्यते परम।।[10]

(घ) दयाः रामायण कालीन जीवन में दयाभाव, दैनिक जीवन में व्यवहार में सम्मिलित था।

आनृशंस्यं परो धर्मः। [11]

(ङ) क्षमाः रामायण कालीन जीवन में दयाभाव के साथ क्षमा का भी महत्वपूर्ण स्थान था।

अलंकारो हि नारीणाम् क्षमा तु पुरूषस्य वा। [12]

(च) दानः तत्कालीन जीवन में दयाभाव एवं क्षमा के साथ दान करना व्यवहार में सम्मिलित था। दान के प्रति यह दर्शन समाहित था कि जरूरतमन्द व्यक्ति को सहायता प्रदान कर उसे अपराध की ओर प्रवृत होने से बचाया जा सकता है।

गोरसं गोप्रदातारो ह्यन्नं चैवान्नदायिनः।
गृहांश्च गृहदातारः स्वकर्मफलमश्नतः।। [13]

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(छ) मैत्रीः रामायण में मैत्री के अनेक प्रसंग उद्धृत हैं, जिनसे जीवन मूल्यों में मैत्री का आदर्श परिलक्षित है। राम–गुहराज मैत्री, राम–सुग्रीव मैत्री एवं दशरथ–जटायु मैत्री आदर्श उदाहरण हैं। रामायण में मैत्री का प्रेरक तत्व उपकार कहा गया है।

उपकार फलम् , मित्रम अपकारो अरि लक्षणम।। [14]

(ज) प्रतिज्ञा पालनः वाल्मीकि रातायाण में प्राप्त जीवन मूल्यों में प्रतिज्ञापालन एक ऐसा व्यक्तिगत गुण था जिसमें सत्य, उदारता, दया, क्षमा, एवं वचनबद्धता एक साथ समाहित थे।

(झ) शरणगत रक्षाः तत्कालीन मूल्यों में शरणागत रक्षा भी जीवनमूल्यों में निहित था। वाल्मीकि रातायाण में नायक के रूप में राम के द्वारा शत्रु के भाई विभीषण को भी शरण प्रदान कर शरणागत रक्षा का आदर्श प्रस्तुत किया।

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते।
अभयं सर्व भूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम्।।[15]

वाल्मीकि रामायण (मूल ग्रन्थ) के अतिरिक्त विभिन्न विद्वानों एवं साहित्यकारों द्वारा 'वाल्मीकि रामायण में प्रकृति चित्रण'[16], 'वाल्मीकि रामायण में ऋतु वर्णन' [17] 'चम्पूकाव्य एवं वाल्मीकि रामायण' [18] 'वाल्मीकि रामायण एवं कला पक्ष' [19] तथा 'वाल्मीकि रामायण का साहित्यिक पक्ष' [20] आदि विषयों पर अध्ययन किये गये हैं। सामाजिक योगदान, चरित्रनिर्माण एवं समाधान के रूप में किसी भी विद्वान द्वारा वाल्मीकि रामायण के किसी भी भाव पक्ष पर शोध कार्यो का प्रायः अभाव ही है।

परिलब्धियाँः

1. **वाल्मीकि रामायण में वर्णित आदर्शवाद वर्तमान में भी प्रासंगिक है।**
2. **वाल्मीकि रामायण में वर्णित जीवन दर्शन अनुकरणीय है।**
3. **सामाजिक पुनर्निमाण में रामयण कालीन जीवन दर्शन की भूमिका महत्वपूर्ण है।**
4. **व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण में आदर्शवादी जीवन दर्शन के योगदान में रामयण कालीन जीवन दर्शन प्रासंगिक है।**

प्रसतुत शोध विश्लेषण रामायण की वर्तमान समय में प्रासंगिकता को सिद्ध करने में, रामायण में वर्णित तत्वज्ञान एवं आदर्शातमकता को

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जनमानस तक पहुँचाने में, रामायण काव्य में वर्णित सांस्कृतिक मूल्यों एवं मानव मूल्यों के गौरव का शिखर तक पहुँचाने में एवं इनकी पुनः प्रतिस्थापना करने में निश्चित ही सहायक सिद्ध होगा।

संदर्भ सूची

1. .... (...) बृहद्धर्मपुराण, पूर्वखण्ड36/14
2. .... (...) वाल्मीकि रामायण, बालकाण्डम्,2/32–33
3. .... (...) वाल्मीकि रामायण, बालकाण्डम्,4/1
4. रवीन्द्रनाथ टैगौर (...) प्राचीन साहित्य का इतिहास
5. मम्मट (...) काव्यप्रकाश, 1/2 वृत्तिभाग
6. .... (...) वाल्मीकि रामायण,
7. उपाध्याय एस.(2008) वाल्मीकि रामायण में प्रकृति चित्रण, 6/18–33, एक्सिस प्रकाशन , दिल्ली।
8. सीमा (2011) 'वाल्मीकि रामायण में ऋतु वर्णन'; यादव पब्लिकेशन्स, दरभंगा, बिहार।
9. स्वामी नाथन (2010) 'चम्पूकाव्य एवं वाल्मीकि रामायण', सामंत प्रकाशन , नई दिल्ली।
10. प्रसाद ए0 (2014) वाल्मीकि रामायण का कला पक्षीय सौन्दर्य'; हीरा पब्लिकेशन्स प्रा0 लिमि0, जयपुर (राज0)
11. सिंह रंजना (2015) 'वाल्मीकि रामायण का साहित्यिक पक्ष'; प्रज्ञा प्रकाशन मथुरा

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies